साकेत
वम्-सर्ग

क प्रामाणिक अध्ययन

राकेश एम० ए०

Scanned with OKEN Scanner

साकेत–नवम्–सर्ग

एक प्रामाणिक अध्ययन

प्राक्कथन लेखक
डॉ० पारसनाथ तिवारी
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

लेखक
राकेश एम० ए०

प्रकाशन केन्द्र
रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ—226007
(Phone : 73035)

(एक प्रामाणिक पुस्तक)

प्रकाशक : प्रकाशन केन्द्र,
रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ—226007
मूल्य : पन्द्रह रुपये पचास पैसे (15.50) मात्र ।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

कथानक और काव्य-वैभव १

व्याख्या-विश्लेषण १०

प्रश्नोत्तर

१. 'साकेत' के नवम् सर्ग की कथावस्तु लिखिए। महाकाव्य 'साकेत' में उसकी स्थिति पर अपना सटीक मत देते हुए उसके काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए। ८४

२. 'साकेत' के नवम् सर्ग के काव्य-सौन्दर्य की सम्यक् समीक्षा कीजिए। [ल० वि० वि० १९७४] ८४

३. 'साकेत' के नवम् सर्ग में उर्मिला के विरह की अभिव्यक्ति यांत्रिक और अस्वाभाविक है।" यह कथन कहाँ तक सही है। [गो० वि० वि० १९७४] ८४

४. "मैथिलीशरण गुप्त का काव्य मूलतः अभिधामूलक और वक्तव्यमूलक है।" 'साकेत' के नवम् सर्ग के आधार पर इस बात का मूल्यांकन कीजिए। [गो० वि० वि० १९७१] ८४

५. 'साकेत' की कथा के सहज विकास में उर्मिला का विरह-वर्णन कहाँ तक सार्थक अथवा बाधक सिद्ध हुआ है। सोदाहरण विवेचना कीजिए। [गो० वि० वि० १९७२] ८४

६. 'साकेत में उर्मिला-विरह वर्णन के काव्यात्मक सौन्दर्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। [ल० वि० वि० १९७२] ९३

७. 'साकेत' में उर्मिला के विरह-वर्णन पर रीतिकालीन प्रभाव को दिखाते हुए उसकी सम्यक् समीक्षा कीजिए। ९३

८. "उर्मिला' के विरह-वर्णन में एक ओर प्राचीन शास्त्रकारों की छाप है तो दूसरी ओर नूतनता का समावेश भी है।"—इस कथन को सिद्ध कीजिए। ९३

Scanned with OKEN Scanner

९. "साकेत में उर्मिला के चरित्र की गंभीरता अक्षुण्ण नहीं रह सकी है।"—इस कथन की समीक्षा कीजिए। [गो० वि० वि० १९६७] ९८

१०. 'साकेत' में चित्रित उर्मिला का चरित्र-चित्रण कीजिए। ९८

११. गीति-काव्य की दृष्टि से 'साकेत' के नवम् सर्ग की समीक्षा कीजिए। १०१

अथवा

"साकेत' का काव्य-रूप महाकाव्यात्मक और उसकी आत्मा प्रगीतात्मक है।" नवम् सर्ग के गीतों को दृष्टि में रखते हुए उक्त कथन की युक्तिपूर्वक समीक्षा कीजिए। [ल० वि० वि० १९७३] १०१

गुप्तजी युग-प्रतिनिधि राष्ट्रीय कवि

१२. गुप्तजी के काव्यों पर दृष्टिपात करते हुए उनका युग-प्रतिनिधित्व सिद्ध कीजिए। १०३

१३. सिद्ध कीजिए कि गुप्तजी युग-प्रतिनिधि राष्ट्रीय कवि हैं। १०३

राम-भक्ति-धारा और साकेत

१४. राम-भक्ति काव्यधारा में 'साकेत' का स्थान निश्चित कीजिए। १०५

कथावस्तु

१५. साकेत की कथावस्तु का संक्षेप में उल्लेख कर उसके नामकरण की मौलिकता सिद्ध कीजिए। १०८

महाकाव्यत्व

१६. महाकाव्यत्व की दृष्टि से साकेत के कथानक की समीक्षा कीजिए। ११९

प्रबन्धात्मकता

१७. प्रबन्धात्मकता की दृष्टि से साकेत की कथावस्तु के गठन की समीक्षा कीजिए। ११३

काव्य-वैशिष्ट्य

१८. साकेत के काव्य-वैशिष्ट्य की विवेचना कीजिए। ११९

साकेत में गार्हस्थ्य-जीवन

१९. 'साकेत में मानव-जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का जीता-जागता चित्रण है। इस कथन की विवेचना कीजिये। १३२

Scanned with OKEN Scanner

चरित्र-चित्रण और उर्मिला

२०. चरित्र-चित्रण की दृष्टि से साकेत की समीक्षा कीजिए ।

साकेत में वैष्णव-भक्ति

२१. 'साकेत' में वैष्णव-भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए । १४७

२२. "राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या !" के आधार पर गुप्तजी की भक्ति भावना और विचार-दर्शन को स्पष्ट कीजिए । १४७

साकेत में भारतीय-संस्कृति

२३. साकेत में निरूपित भारतीय-संस्कृति के स्वरूप का निरूपण कीजिए और सिद्ध कीजिए कि गुप्तजी भारतीय-संस्कृति के अमर गायक हैं। १५२

हिन्दी-काव्य में 'साकेत' का स्थान

२४. वर्तमान हिन्दी-काव्यों में साकेत का स्थान निश्चित कीजिए । १५५

२५. आधुनिक महाकाव्यों के शिल्प में साकेत का स्थान निश्चित कीजिए । [गो० वि० वि० १९६५] १५५

२६. "साकेत' त्रेता-युग से सम्बद्ध होते हुए भी आधुनिक युग की कथा कह रहा है ।"—इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए । [गो० वि० वि० १९६८) १५५

२७. "साकेत' का कवि आगे बढ़ता हुआ भी पीछे की ओर देखता जाता है ।"—इस उक्ति की छाया में साकेतकार की प्रगति परम्परा का निरूपण कीजिए । [गो० वि० वि० १९७३] १५५

साकेत में नायक-निर्णय

२८. "साकेत' में प्राधान्य नायकत्व उर्मिला का है, औपचारिक लक्ष्मण का ।"—इस कथन की विवेचना कीजिए । १५८

२९. 'साकेत' में नायक-नायिका समस्या पर विचार कीजिए । १५८

३०. साकेत का नायक कौन है ? सप्रमाण उत्तर दीजिए । १५८

प्रकृति-चित्रण

३१. "साकेत' के उर्मिला विरह-वर्णन में ही प्रकृति को प्रधानता दी गई है । आप इसे कहाँ तक मनोविज्ञान सम्मत और रीति-परम्परानु-

Scanned with OKEN Scanner

मोदित समझते हैं।" उदाहरणों सहित अपने तर्क प्रस्तुत कीजिए।
[गो० वि० वि० १९७०]

३२. साकेत के प्रकृति-चित्रण की समीक्षा नवम् सर्ग को दृष्टि में रखकर कीजिए। १६१

उर्मिला-राधा-नागमती

३३. 'प्रियप्रवास' की राधा और 'साकेत' की उर्मिला के विरह-वर्णन की तुलना कीजिए। १६५

३४. विद्यापति, सूर, प्रियप्रवास की राधा और जायसी की नागमती से 'साकेत' की उर्मिला के विरह-वर्णन की तुलना कीजिए। १६५

———

Scanned with OKEN Scanner